भीष्म को क्षमा नहीं किया गया

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

SHEEJA PK

ASSISTANT PROFESSOR(ON CONTRACT)

DEPARTMENT OF HINDI

LITTLE FLOWER COLLEGE ,GURUVAYOOR,KERALA

आचार्य
हजारी प्रसाद द्विवेदी

- पिता का नाम -पण्डित अनमोल दूब
- शिक्षा -काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्ति की
- साहित्यिक पहचान –उपन्यासकार,निबन्धकार,चिन्तक, आलोचक,इतिहासकार,और शोध-कर्ता
- उपाधि -1949 ई. मे डी.लिट् की उपाधि तथा

  1957 ई. पद्मभूषण से सम्मानित

भाषा शैली

- भाषा : हज़ारी प्रसाद द्‌बिवेदी ने परमार्जित खडी बोली का उपयोग किया है। उसकी भाषा व्यवहारिक एवं संस्कृत निष्ठ भी होती हैं। वे भाव और विषय के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया था।
- शैली : हजा़री प्रसाद द्‌बिवेदी ने मुख्य रूप मे गवेषणात्मक,वर्णनात्मक, व्यग्यात्मक एवं व्यास शैली मे लेखन कार्य किया है

मेरे एक मित्र हैं बड़े विद्वान, स्पष्टवादी और नीतिमान। वह इस राज्य के बहुत प्रतिष्ठित नागरिक हैं। उनसे मिलने से सदा नयी स्फूर्ति मिलती है। यद्यपि वह अवस्था में मुझसे छोटे हैं, तथापि मुझे सदा सम्मान देते हैं। इस देश में यह एक अच्छी बात है कि सब प्रकार से हीन होकर भी यदि कोई उम्र में बड़ा हो तो थोड़ा-सा आदर पा ही जाता है। मैं भी पा जाता हूँ। मेरे इस मित्र की शिकायत थी कि देश की दुर्दशा देखते हुए भी मैं कुछ कह नहीं रहा हूँ, अर्थात् इस दुर्दशा के लिए जो लोग ज़िम्मेदार हैं उनकी भर्त्सना नहीं कर रहा हूँ। यह एक भयंकर अपराध है। कौरवों की सभा में भीष्म ने द्रौपदी का भयंकर अपमान देखकर भी जिस प्रकार मौन धारण किया था वैसे ही मैं और मेरे जैसे कुछ अन्य साहित्यकार चुप्पी साधे हैं। भविष्य इसे उसी तरह क्षमा नहीं करेगा जिस प्रकार भीष्म पितामह को क्षमा नहीं किया गया। मैं थोड़ी देर तक अभिभुत होकर सुनता रहा और मन में पापबोध का भी एहसास हुआ। सोचता रहा, कुछ कहना चाहिए, नहीं तो भविष्य क्षमा नहीं करेगा। वर्तमान ही कौन क्षमा कर रहा है? काफ़ी देर तक मैं परेशान रहा—चुप रहना ठीक नहीं है, कम्बख्त भविष्य कभी माफ़ नहीं करेगा।

धन्यवाद